कचोटती स्वतंत्रता

• नाज़िम हिकमत

तुम बेचते हो अपनी आँखों का शऊर, अपने हाथों की दृष्टि
तुम बनाते हो लोइयाँ दुनिया भर की चीज़ों की
बिना एक कौर चखे।
अपनी महान आज़ादी के साथ तुम खटते हो गैरों के लिए
जो तुम्हारी अम्मा को कलपाते-रुलाते हैं, उन्हें
धन्नासेठ बनाने की आज़ादी के साथ
तुम स्वतंत्र हो।
धरती पर गिरने के साथ ही वे सवार हो जाते हैं तुम्हारे सिर पर
उनकी झूठ चक्कियाँ पीसती हैं लगातार तुम्हारी ज़िन्दगी
हथेलियों से कनपटियाँ दाबे महान आज़ादी के साथ बिसूरते हो तुम
अन्तःकरण की स्वतंत्रता के साथ
तुम स्वतंत्र हो।
तुम्हारा झूलता सिर अलग हुआ जान पड़ता है तुम्हारी गर्दन से
लटकती हैं बाहें आजू-बाजू
मटरगश्ती करते हो तुम अपनी महान आज़ादी में
बेरोज़गारी की स्वतंत्रता के साथ
तुम स्वतंत्र हो।
तुम प्यार करते हो देश को जिगरी दोस्त के समान
किसी रोज़ वे, उसे बेच देत हैं, शायद अमेरिका को
साथ में तुम्हें भी, तुम्हारी महान आज़ादी समेत
हवाई अड्डा बनने की स्वतंत्रता के साथ
तुम स्वतंत्र हो।
वॉल स्ट्रीट तुम्हारी गर्दन जकड़ती है सत्यानाश हो उसके हाथों का
किसी दिन वे तुम्हें भेज देते हैं कोरिया
अपनी महान आज़ादी से तुम भरते हो एक कब्र...
गुमनाम सैनिक हो जाने की स्वतंत्रता के साथ
तुम स्वतंत्र हो।
लोहे का फाटक नहीं,
परदा नहीं फरदे का, टाट तक की ओट नहीं
ज़रूरत ही क्या है तुम्हें स्वतंत्रता का वरण करने की
तुम स्वतंत्र हो।
नीली छतरी के तले कचोटती है ऐसी स्वतंत्रता।

आधुनिक काल

• बॉबी सैण्ड्स

(आयरलैण्ड की मुक्ति के लिए संघर्ष करने वाला एक युवा कवि क्रान्तिकारी जो यतीन्द्रनाथ दास की ही तरह राजनीतिक कैदी का दर्जा देने की माँग को लेकर अनशन करते हुए 1981 में शहीद हो गया।)

कहा जाता है
हम रहते हैं आधुनिक काल में
उन्यासी के सुसभ्य साल में
पर नज़रें दौड़ाता हूँ जब मैं अपने चारों ओर
देख पाता हूँ सिर्फ
आधुनिक यातना, दर्द और ढोंग।
छोटे बच्चे मरते हैं आधुनिक काल में
मरते हैं वे भूखों तड़प-तड़पकर,
कौन यह पूछने की हिम्मत करता है, "आखिर क्यों?"
नापाम बमों से आहत भागती हैं निर्वस्त्र नन्हीं लड़कियाँ
अपनी चीखों से भेदती हुई रात की हवाओं को
और जब मोटे थुलथुल तानाशाह
आसीन होते हैं अपने सिहांसनों पर
नन्हें बच्चे दफ्न करते होते हैं
अपने माँ-बापों की अस्थियाँ।
निस्तब्ध रात्रि में खुफ़िया पुलिस नज़रों से
ओझल कर देती है नंगी औरतों को
हमेशा-हमेशा के लिए बिजली के झटके दे-देकर।
गटर में मरा पड़ा होता है काला आदमी।
जहाँ बहती है तेल की सबसे अधिक काली धार
गली लाल हो उठती है
और यहीं वह रहता है
जो पैदा हुआ, आया रहने के लिए
इस दुनिया-जहान में
लेकिन जिया और मरा आज़ादी के बिना।
नौकरशाह, सट्टेबाज और राजाध्यक्ष
सभी टाँक देते हैं अपनी गन्दी, दुर्गन्धित प्रसन्न हँसी
आज की रात के सीने पर।
अपनी कब्र से चीखेगा एक अकेला आदमी
और आने वाले कल का अभागा
अपनी माँ के गर्भ से बाहर आ जाएगा।